MAKTABATUL MADINA INDIA

हफ़्तावार रिसाला : 434
Weekly Booklet : 434

Qootul Quloob Se 57 Madani Phool (Qist-1) (Hindi)

क़ूतुल क़ुलूब

से 57 मदनी फूल (क़िस्त : 1)

(सफ़्हात : 17)

सूफ़ी कौन ? 02
मुरीद के लिये सात ज़रूरी बातें 05
जन्नती बनाने वाला अ़मल 11
जमाअ़त फ़ौत होने का सबब 13

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

“क़ूतुल क़ुलूब” से 57 मदनी फूल (क़िस्त : 1)[1]

दुआए अ़त्तार : या रब्बे करीम ! जो कोई 17 सफ़हात का रिसाला “क़ूतुल क़ुलूब से 57 मदनी फूल (क़िस्त :1) ” पढ़ या सुन ले उसे अपनी इ़बादत का जज़्बा दे, उसे मां बाप और ख़ानदान समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िला नसीब फ़रमा। اٰمِين بِجاہِ خاتَمِ النَّبِيّين صلَّى اللّٰهُ عليهِ واٰلہٖ وسلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : “जिस ने मुझ पर दिन में एक हज़ार मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा, वोह मरेगा नहीं जब तक जन्नत में अपना ठिकाना न देख ले।” (الترغیب والترہیب، 2/328، حدیث:22)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

इ़ल्म नूर है

﴾1﴿ इ़ल्म एक नूर है जिसे **अल्लाह** बन्दे के दिल में डाल देता है। इ़ल्म तन्हाई में ग़मख़्वार है और फ़रिश्ते इ़ल्म वालों की दोस्ती को मरग़ूब जानते हैं और उन्हें अपने परों से छूते हैं इ़ल्म इमाम है और अ़मल उस का ताबेअ़ है।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) 1/10, 11 मुल्तक़तन)

﴾2﴿ सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : इ़ल्म का दर्स देना तस्बीह़ और उस की अहलियत रखने वालों तक उसे पहुंचाना **अल्लाह** का क़ुर्ब ह़ासिल करना है। (جامع بیان العلم وفضلہ، ص77، حدیث:240) (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) 1/10 मुल्तक़तन)

1 ··येह रिसाला अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की किताब “क़ूतुल क़ुलूब जिल्द अव्वल (उर्दू)” से तय्यार किया गया है।

﴾3﴿ बातिनी उ़लूम पर अ़मल कैसे ?

बातिनी उ़लूम वोह (आजिज़ी व इख़्लास और तवक्कुल वग़ैरहा और तकब्बुर, रियाकारी, ह़सद वग़ैरहा) हैं जिन पर बातिनी आज़ाए जिस्मानी यानी क़ल्ब (दिल) से अ़मल होता है। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) 1/13)

तसव्वुफ़ की तारीफ़ और सूफ़ी कौन ?

﴾4﴿ ह़ज़रते रुवैम बिन अह़मद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : तसव्वुफ़ येह है कि बन्दा अपने नफ़्स को अपने रब की मर्ज़ी पर छोड़ दे कि वोह जो चाहे उस से काम ले। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) 1/13)

﴾5﴿ ह़ज़रते अबुल ह़सन क़न्नाद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : सूफ़ी वोह होता है जो **अल्लाह** पाक के हुक़ूक़ की अदाएगी के लिये हर वक़्त तय्यार रहता है।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) 1/19)

﴾6﴿ तसव्वुफ़ की अस्ल

तसव्वुफ़ में दो बातें अस्ल की ह़ैसिय्यत रखती हैं : तज़्किय़ए नफ़्स (यानी नफ़्स की इस्लाह़) और एह़सान। तज़्किय़ए नफ़्स का ज़िक्र क़ुरआने करीम में बिअ़सते नबवी के मक़ासिद में बार बार आया है और एह़सान का ज़िक्र ह़दीसे पाक में मिलता है। येही वज्ह है कि ह़दीसे जिब्रील को तसव्वुफ़ की अस्ल समझा जाता है। مَا الْاِحْسَانُ ? के जवाब में आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्लाह़े बातिन के ह़वाले से कुछ यूं इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** की इ़बादत इस त़रह़ करो गोया कि **अल्लाह** पाक को देख रहे हो और अगर इस मक़ाम को न पा सको तो येह यक़ीन रखो कि **अल्लाह** पाक तुम्हें ज़रूर देख रहा है। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) 1/20, 21 मुल्तक़त़न)

﴾7﴿ ग़ुर्बत (यानी वत़न से दूरी) और गुदड़ी

ह़ज़रते यह़या عَلَيْهِ السَّلَام की सुन्नत है कि उन्हों ने अपने वत़न में भी

मुसाफ़िरों की त़रह ज़िन्दगी बसर की और ख़ानदान में रहते हुए भी अपनों से बेगाना रहे। गुदड़ी (सूफ़ का लिबास) ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की सुन्नत है जिन्हों ने सब से पहले पशमीनी (यानी ऊनी) लिबास ज़ेबे तन फ़रमाया। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) 1/22)

﴾8﴿ ह़ज़रत अबू तुफ़ैल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ (वफ़ात 100 हि.) का विसाल मक्कए मुकर्रमा में सब से आख़िर में हुवा, जब एक सदी हिजरी पूरी हुई तो सत़्हे ज़मीन पर कोई ऐसी आंख बाक़ी न रही जिस ने हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर मह़बूबे रब्बे अकबर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की हो। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) 1/24) (تاریخ ابن عساکر 26/118)

﴾9﴿ शैख़ अबू त़ालिब मक्की, आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِمَا के नज़्दीक

आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 22, स. 557 पर फ़रमाते हैं : शैख़ अबू त़ालिब मक्की رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ कसीर इ़ल्म से मामूर हैं, ह़ाल में साहिबे कमाल हैं और अस्लाफ़ के ह़ालात को ब ख़ूबी जानते हैं और तक़्वा व वरअ़ में उन का एक ख़ास मक़ाम है और ज़ियादा बेहतर उमूर में गहरी सोच और फ़िक्रे कामिल रखते हैं। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) 1/31)

﴾10﴿ रिज़ाए इलाही की तारीफ़ व ह़ुसूल

रिज़ा अह़कामे इलाही के निफ़ाज़ पर दिल के मुत़मइन रहने का नाम है और दिल का सुकूनो इत़मीनान इख़्तियारी अ़मल नहीं बल्कि वहबी व अ़त़ाई (यानी **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से अ़त़ा कर्दा) है। **अल्लाह** पाक जिसे चाहता है अ़त़ा फ़रमाता है। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) 1/33)

﴾11﴿ 40 साल तक ह़िक्मत के मोती इकट्ठे किये

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने 40 साल तक अपने सीने में ह़िक्मत के मोती इकट्ठे किये फिर ज़बान से उन का इज़्हार किया।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) 1/38)

﴾12﴿ आ़लिम अपनी ख़ल्वत (यानी तन्हा रहने) को अ़ज़ीज़ समझता है हां अगर ख़ास रुफ़क़ा मुयस्सर हों तो फिर उन की सोह़बत को ख़ल्वत पर तरजीह़ देता है।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/40)

﴾13﴿ हम बेकसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : “तुम में से कोई भी अपने भाई को उस की जगह से उठा कर ख़ुद उस जगह न बैठे बल्कि वुसअ़त और कुशादगी इख़्तियार कर लिया करो।”

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) 1/45) (مسلم، ص923، حدیث:5684)

﴾14﴿ नमाज़े जुमुआ़ की तय्यारी

बाज़ बुज़ुर्ग नमाज़े जुमुआ़ के लिये शबे जुमुआ़ जामेअ़ मस्जिद में बसर किया करते और कुछ हफ़्ते की रात भी जामेअ़ मस्जिद ही में बसर किया करते ताकि जुमुआ़ की मज़ीद बरकतें नसीब हों जब कि अ़वामुन्नास अपने मह़ल्ले की मसाजिद में नमाज़े फ़ज्र अदा करते और फिर जामेअ़ मसाजिद का रुख़ करते। मन्क़ूल है कि सब से पहली बिदअ़त इस्लाम में येह पैदा हुई कि जामेअ़ मस्जिद में जल्दी जाना छोड़ दिया गया। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) 1/45, 46 मुल्तक़त़न)

﴾15﴿ हर दम हो मेरा ज़िक्र “अल्लाह अल्लाह”

ह़ज़रते शैख़ अबू त़ालिब मक्की رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ज़िन्दगी का हर हर लम्ह़ा यादे इलाही में बसर होता गोया वोह यादे इलाही से ग़फ़्लत में ली जाने वाली सांस को सांस ही शुमार न करते। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) 1, 46 मुल्तक़त़न)

﴾16﴿ अपने वक़्त की बेहतरीन तक़्सीमकारी

वक़्त कितना ही मुख़्तसर क्यूं न हो, तीन बातों से ख़ाली न हो। (1) उस वक़्त में उस पर **अल्लाह** पाक का कोई फ़र्ज़ लाज़िम होगा जिस की दो सूरतें हैं : वोह अम्र ऐसा होगा जिस के बजा लाने या छोड़ देने का उसे हुक्म दिया गया होगा।

(2) वोह वक़्त किसी मुस्तहब काम की अदाएगी में बसर कर दे (3) उस वक़्त में कोई ऐसा मुबाह़ (जाइज़) काम सर अन्जाम दे जिस में जिस्म और दिल दोनों का फ़ाइदा हो, मोमिन के लिये उन मज़कूरा औक़ात के इलावा कोई चौथा वक़्त नहीं, अगर उस ने कोई चौथा वक़्त निकाला तो वोह **अल्लाह** पाक की हुदूद से तजावुज़ करने (यानी ह़द से आगे बढ़ने) वाला शुमार होगा और जो **अल्लाह** पाक की हुदूद से तजावुज़ करता है वोह अपने ही नफ़्स पर ज़ुल्म करने वाला है।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/47 मुल्तक़तन)

《17》 मुरीद के लिये सात ज़रूरी बातें

(1) इरादे में सच्चाई का होना। इस की अ़लामत है आख़िरत के लिये ज़ादेराह (सामान) का तय्यार होना। (2) ताअ़त (नेकी) के अस्बाब इख़्तियार करना। इस की अ़लामत है बुरे दोस्तों को छोड़ देना। (3) ह़ाले नफ़्स की मारिफ़त (पहचान) रखना। इस की अ़लामत है आफ़ाते नफ़्स से आगाह होना। (4) आ़लिमे रब्बानी (फ़क़ीह आ़लिम) की मजलिस में बैठना। इस की अ़लामत है आ़लिमे रब्बानी को दूसरों पर तरजीह़ देना। (5) तौबए नसूह़ (यानी ऐसी तौबा जिस के बाद इर्तिकाबे गुनाह न हो) का होना ताकि इस के सबब इ़बादत की लज़्ज़त पाए और हमेशा साबित क़दम रहे। तौबा की अ़लामत है ख़्वाहिशे नफ़्स के अस्बाब का ख़ातिमा और नफ़्स को उस की मरग़ूब (यानी पसन्दीदा) अश्या से दूर रखना। (6) ऐसी ह़लाल अश्या खाना जो मज़्मूम (नापसन्दीदा) न हों। (7) नेक काम में मदद करने वाले किसी रफ़ीक़ का होना। अच्छे रफ़ीक़ की अ़लामत है उस का नेकी और तक़्वा के काम में तआ़वुन करना और गुनाह व सरकशी से मना करना।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/49 मुल्तक़तन)

《18》 “कशफ़ुज़्ज़ुनून” में है, इस्लाम में त़रीक़त की बारीकियों में “क़ूतुल क़ुलूब” की मिस्ल कोई किताब नहीं लिखी गई। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/54)

﴾19﴿ जल्दी और भूल का वासित़ा और सबब "शैत़ान" है और दूसरा येह कि बन्दे पर उस वक़्त तौफ़ीक़ की कमी होती है। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/59 मुल्तक़त़न)

﴾20﴿ जिसे किताब व सुन्नत से कोई फ़ज़ीलत मालूम हो और वोह उस पर सवाब की उम्मीद रखते हुए अ़मल करे तो **अल्लाह** पाक उसे उस पर अ़मल का सवाब अ़त़ा फ़रमाता है अगर्चे वैसा न हो जैसे कहा गया था।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/61) (جمع الجوامع، 7/124، حدیث:21590)

﴾21﴿ इन्सान को चाहिये कि वोह नमाज़े फ़ज्र के बाद दिन के कामों के बारे में सोचे, कौन से फ़र्ज़ और नेक काम (मुस्तह़ब्बात) करने हैं और येह भी सोचे कि **अल्लाह** पाक ने अपनी रह़मत और करम से उस के गुनाहों को लोगों से छुपाया हुवा है। अगर **अल्लाह** पाक चाहे तो ऐ़ब ज़ाहिर हो जाते। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/131)

﴾22﴿ बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم तुलूए़ फ़ज्र से ले कर तुलूए़ आफ़्ताब तक ख़ैरो भलाई के इ़लावा कलाम करने को नापसन्द समझते थे। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) 1/135)

﴾23﴿ अफ़्ज़ल इ़ल्म और अफ़्ज़ल अ़मल

मरवी है कि लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा कि उन में अफ़्ज़ल तरीन इ़ल्म, ख़ामोशी और अफ़्ज़ल तरीन अ़मल (गुनाहों से बचा रहने की वज्ह से) नींद होगा। काश ! बन्दा ह़ालते बेदारी में भी सोने वाले की त़रह़ हो जाए क्यूंकि नींद में बन्दा गुनाहों से मह़फ़ूज़ रहता है जब कि ह़ालते बेदारी में मआ़सी (गुनाहों) से मह़फ़ूज़ रहना एक मुश्किल अम्र (मुआ़मला) है।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/144 मुल्तक़त़न)

﴾24﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक उन लोगों को पसन्द फ़रमाता है जो फ़ारिग़ हों तो सलामती ह़ासिल करने के लिये (यानी

अपने आप को गुनाहों और फ़ुज़ूलिय्यात से बचाने के लिये) सो जाएं।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/144 मुल्तक़तन)

﴾25﴿ दिन में दो बार सोना ऐसे ही ना पसन्दीदा है जैसे शब बेदारी (यानी रात में इ़बादत) न करने वाले के लिये दिन में सोना ना पसन्दीदा है। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/147)

﴾26﴿ आठ घंटे नींद मुस्तह़ब

ज़ोहर के बाद की नींद आने वाली रात के लिये होगी और ज़ोहर से क़ब्ल की गुज़श्ता रात के लिये थी मुस्तह़ब येह है कि दिन और रात में आठ घंटो से ज़ाइद न सोए। बाज़ लोगों का ख़याल है कि अगर दिन और रात में इतने घंटो आराम न किया तो उस का बदन कमज़ोर हो जाएगा क्यूंकि नींद जिस्म की ग़िज़ा और उस की राह़त है। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) 1/148 मुल्तक़तन)

﴾27﴿ ज़ोहर और अ़स्र के दरमियान मस्जिद में एतिकाफ़ मुस्तह़ब है।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/148)

﴾28﴿ हर शै सज्दा रेज़

ज़ोहर व अ़स्र के दरमियान का वक़्त शाम के उन औक़ात में से एक है जिस वक़्त हर शै सज्दा रेज़ होती है येह कितनी बुरी बात है कि बेजान व मुर्दा अश्या तो अपने परवरदगार की बारगाह में सज्दा रेज़ हों और उस के ज़िक्र में मश्ग़ूल हों लेकिन जीता जागता इन्सान अपने परवरदिगार से ग़ाफ़िल हो। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) 1/150)

﴾29﴿ तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस का आज गुज़श्ता दिन से बुरा हो तो वोह मह़रूम है।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/155 मुल्तक़तन) (الفردوس بماثور الخطاب، 3/611، حدیث:5910)

﴾30﴿ जो **अल्लाह** पाक की इ़बादत करता हो फिर सुस्ती के बाइ़स उसे तर्क कर दे तो **अल्लाह** पाक उस से नाराज़ हो जाता है।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) 1/172) (الطبقات الشافعیہ، 6/298)

«31» तह़िय्यतुल मस्जिद के क़ाइम मक़ाम

जो शख़्स मस्जिद में तह़िय्यतुल मस्जिद अदा किये बग़ैर बैठे उसे चाहिये कि येह कलिमात चार मरतबा पढ़ लिया करे : ”سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَ لَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ“ क्यूंकि येह कलिमात फ़ज़ीलत में दो रकअ़तों के बराबर हैं और जो मस्जिद में बे वुज़ू दाख़िल हो या मस्जिद से गुज़रे तो वोह भी येह कलिमात चार मरतबा पढ़ लिया करे। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/173, 174)

«32» बे वुज़ू मस्जिद में दाख़िल होना

ह़ज़रते शैख़ अबू त़ालिब मक्की رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं मुझे किसी का बे वुज़ू मस्जिद में दाख़िल होना और बैठना ना पसन्द है। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/174)

«33» सूरज के सात ज़वाल के वक़्त

सूरज के सात ज़वाल हैं। उन में तीन ऐसे हैं जिन्हें कोई इन्सान नहीं जानता : पहले ज़वाल का वक़्त **अल्लाह** पाक के सिवा कोई नहीं जानता। दूसरा, सिर्फ़ वोह फ़रिश्ते जानते हैं जो सूरज के निगेहबान हैं। तीसरे ज़वाल के वक़्त को ज़मीन के फ़रिश्ते जानते हैं। चौथे को अहले नुजूम फ़लक की पैमाइश और अफ़्लाक की तरकीब से पहचानते हैं। पांचवीं को ह़िसाब दान और तक़्वीम के माहिरीन आलात वग़ैरा के ज़रीए जान लेते हैं। छटे का इ़ल्म मुअज़्ज़िनों और वक़्त का ध्यान रखने वाले अफ़राद को होता है और सातवें को तमाम लोग पहचानते हैं उस वक़्त में नमाज़ पढ़ी जाती है। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/178)

«34» सूरज की रफ़्तार

सरकारे वाला तबार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام से पूछा : क्या ज़वाले शम्स का वक़्त हो गया है ? अ़र्ज़ की : नहीं, हां। तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा येह कैसे हो सकता है ? अ़र्ज़ किया : मेरे आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

से सिर्फ़ "नहीं, हां" कहने के दौरान सूरज ने फ़लक में पचास हज़ार फ़र्सख़ का फ़ासिला तै कर लिया था।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/179)(ارشاد الساری، 2/218، تحت الحدیث:540)

﴾35﴿ रिज़ा नेक लोगों के लिये और अफ़्व गुनाहगारों के लिये

अल्लाह पाक की रिज़ा नेकोकारों के लिये है और इस का अफ़्वो करम गुनाहगारों के लिये है। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/181) (شرح السنہ للبغوی، 2/16)

﴾36﴿ जुमुए के दिन की फ़ज्र

जो शख़्स जुमुआ को नमाज़े फ़ज्र बा जमाअत अदा करे फिर मस्जिद में बैठ कर **अल्लाह** पाक का ज़िक्र करता रहे यहां तक कि सूरज तुलूअ हो जाए तो उस के लिये जन्नतुल फ़िरदौस में ऐसे 70 दर्जे होंगे कि हर दो दर्जों के दरमियान एक तेज़ रफ़्तार घोड़े के 70 साल दौड़ने की मिक़्दार के बराबर फ़ासिला होगा।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/186) (شعب الایمان، 3/60، حدیث:2870)

﴾37﴿ जहन्नमी जन्नती हो जाएगा

सुल्ताने बहरोबर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : जो पीर की शब दो रकअतें इस तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास व फ़लक़ व नास पन्दरह पन्दरह बार पढ़े फिर सलाम के बाद आयतुल कुर्सी और इस्तिग़फ़ार भी पन्दरह पन्दरह बार पढ़े तो **अल्लाह** पाक उसे जन्नतियों में शामिल कर देता है अगर्चे वोह जहन्नमियों में से हो और उस के मख़्फ़ी व अलानिया सब गुनाह बख़्श दिये जाते हैं और उस की पढ़ी गई हर आयत के बदले एक हज और उमरे का सवाब लिखा जाता है और एक पीर से दूसरे पीर के दरमियान उस की मौत वाक़ेअ हो जाए तो वोह शहीद की मौत मरेगा।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/189)(اتحاف السادۃ المتقین، 3/630)

﴾38﴿ मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं कि अ़क़्लमन्द व दाना लोग रात के इब्तिदाई औक़ात में और क़वी व तवाना रात के आख़िरी ह़िस्से में नमाज़े वित्र अदा करते हैं।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/197) (اتحاف الخیرۃ المھرۃ،3/146،حدیث:2406)

﴾39﴿ **अल्लाह** पाक के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रात की इब्तिदा, वस्त़ और इन्तिहाए सह़र (तीनों औक़ात में) वित्र अदा किये।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) 1/197, 198) (ابن ماجہ،2/53،حدیث:1185)

﴾40﴿ सुब्ह़ के वक़्त बैतुल ख़ला (इस्तिन्जा ख़ाना) जाना त़िब्बी लिह़ाज़ से जिस्म के लिये बहुत मुफ़ीद है और त़हारत के लिये ज़ियादा बेहतर है ख़ास त़ौर पर उन अफ़राद के लिये जो दिन के वक़्त खाना खाते हैं। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/202)

﴾41﴿ बन्दा जब बा वुज़ू हो कर ज़िक्र करते हुए मुशाहदा व तफ़क्कुर (ग़ौरो फ़िक्र) में मश्ग़ूल सोता है तो उस का बिस्तर ही उस की मस्जिद (यानी मह़ल्ले इ़बादत) बन जाता है और बेदार होने तक नमाज़ी लिखा जाता है। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/213)

﴾42﴿ तहज्जुद की इब्तिदा दो मुख़्तसर रकअ़तों से करना मुस्तह़ब है और नमाज़ पढ़ने से फ़ारिग़ होने तक कुछ न खाया पिया जाए क्यूंकि बन्दा जब नींद से बेदार होता है तो उस का दिल हर क़िस्म की ख़्वाहिशात से ख़ाली होता है जब वोह कुछ खाए पिएगा तो उस की कैफ़िय्यत तब्दील हो जाएगी। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/216)

﴾43﴿ तहज्जुद के फ़ज़ाइल

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "नमाज़ (यानी तहज्जुद) ज़रूर अदा किया करो ! क्यूंकि येह तुम्हारे रब की रिज़ा का बाइ़स है, येह तुम्हारे गुनाहों को मिटाने वाली है, तुम से पहले नेक बन्दों का येही त़र्ज़े अ़मल रहा है येह गुनाहों को दूर

करने वाली, बोझ उतारने वाली और जिस्म से बीमारियों को भगाने वाली है।"

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/219) (ترمذی، 5/322، حدیث:3560)

﴾44﴿ जन्नत के काम

हज़रते अ़ली बिन बक्कार رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का क़ौल है कि 40 साल तक सिवाए तुलूए फ़ज्र के किसी शै ने मुझे ग़म में मुब्तला न किया। किसी का क़ौल है कि दुनिया में रात के वक़्त क़ियाम करना, ह़बीब (दोस्त) से बातें करना और शहे रग से भी ज़ियादा क़रीब ज़ात से मुनाजात करना दुनिया के आमाल नहीं हैं बल्कि येह तो जन्नत के काम हैं जिन्हें **अल्लाह** पाक ने दुनिया में अपने ख़ास बन्दों के लिये ज़ाहिर फ़रमाया है, नीज़ उन के सिवा उन आमाल की मारिफ़त किसी को नहीं और न ही उन आमाल की बजा आवरी से उन के सिवा किसी के दिल को राह़त मिलती है। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/222, 223 मुल्तक़तन)

﴾45﴿ ह़ज़रते उ़त्बा ग़ुलाम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं 20 साल तक रात में मशक़्क़त उठाता रहा और फिर 20 साल से उस की नेमतों से लुत्फ़ अन्दोज़ हो रहा हूं। (यानी 20 साल ब तकल्लुफ़ इ़बादत फ़रमाते रहे और फिर इ़बादत में इस क़दर दिल लग गया कि इ़बादत से सुकून और लज़्ज़त ह़ासिल होती है।)

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) 1/223)

﴾46﴿ अच्छी आवाज़ से तिलावत

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : "**अल्लाह** पाक ने किसी शै का ह़ुक्म (उस त़रह़) नहीं दिया जिस त़रह़ क़ुरआने पाक को अच्छी आवाज़ से पढ़ने का दिया है।" (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/226)(بخاری، 4/592، حدیث:7544)

﴾47﴿ क़ुर्बे इलाही का ज़रीआ

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि बन्दा जब रात के वक़्त नमाज़े तहज्जुद अदा करते हुए तरतील से क़ुरआने करीम पढ़ता है जिस त़रह़ कि हुक्म दिया गया है तो उसे **अल्लाह** पाक का क़ुर्ब ह़ासिल होता है। मज़ीद फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** पाक के उन के दिल के क़रीब होने की वज्ह से (ऐसा करने वाले) मह़सूस करते हैं कि उन के दिलों में रिक़्क़त, ह़लावत और अन्वारो तजल्लियात मोजज़न हैं। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1, 227)

﴾48﴿ रात को इ़बादत करने के लिये मददगार चीज़ें

शब में क़ियाम करना ज़ादे राह के बग़ैर मुम्किन नहीं क्यूंकि हर सफ़र ज़ादे राह के साथ त़ै होता है पस राहे सुलूक का भी एक ज़ादे राह है जो उस राह पर चलना चाहे उसे चाहिये कि कुछ ज़ख़ीरा बत़ौरे ज़ादेराह जमा कर के साथ ले ले। ज़ादे राह येह अश्या हैं : खाने से मेदा ख़ाली हो, पानी कम पिये, दिन के वक़्त क़ैलूला करे और उम्रे दुनिया में मश्ग़ूल हो कर आज़ा को ह़द से ज़ियादा न थकाए।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) 1/229)

﴾49﴿ रातों की इ़बादत

एक रिवायत में है कि **अल्लाह** पाक ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक मेरा ह़क़ीक़ी बन्दा वोही है जो क़ियाम (इ़बादत) करने के लिये मुर्ग़ की अज़ान का इन्तिज़ार नहीं करता।" इस रिवायत में वक़्ते सह़र से क़ब्ल क़ियाम पर उभारना पाया जाता है। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/229)

﴾50﴿ रात के आख़िरी ह़िस्से में सोना

रात के आख़िरी ह़िस्से में सोने के मुस्तह़ब होने की 2 वज्हें हैं :

(1) (रात के आख़िरी हिस्से में सोना) सुब्ह के वक़्त की ऊंघ ख़त्म कर देता है कि बुज़ुर्गाने दीन सुब्ह के ऊंघने को बहुत ज़ियादा नापसन्द फ़रमाया करते बल्कि ऊंघने वाले को नमाज़े फ़ज्र के बाद सोने का हुक्म देते।

(2) चेहरे की ज़र्दी थोड़ी कम हो जाए क्यूंकि अगर बन्दा रात का अक्सर हिस्सा हालते क़ियाम में गुज़ारे और सहर के वक़्त सो जाए तो सुब्ह के वक़्त आने वाली ऊंघ से भी नजात मिल जाएगी और चेहरे की ज़र्दी भी कम हो जाएगी, अगर वोह रात का अक्सर हिस्सा सोया रहे फिर सहरी के वक़्त बेदार हो तो सुब्ह के वक़्त न सिर्फ़ वोह ऊंघता रहेगा बल्कि चेहरे की ज़र्दी भी वाज़ेह होगी। लिहाज़ा बन्दे को उस से बचना चाहिये क्यूंकि येह शोहरत और मख़्फ़ी शहवत (यानी नेकी पर तारीफ़ की छुपी हुई ख़्वाहिश) का दरवाज़ा है। इस के इलावा रात के वक़्त बहुत कम पानी पिया करे कि उस से भी चेहरे पर ज़र्दी छा जाती है बिल ख़ुसूस रात के आख़िरी हिस्से में और नींद से बेदार होने के बाद। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/230)

﴾51﴿ जमाअ़त फ़ौत होने का सबब

ह़ज़रते अबू सुलैमान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : नमाज़े बा जमाअ़त फ़ौत होने का सबब कोई न कोई गुनाह होता है। ह़ज़रते इब्ने साफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं तक़रीबन 30 साल तक जेल का निगरान रहा रात के वक़्त आवारा गर्दी करते हुए जो भी पकड़ा जाता और जेल भेजा जाता मैं उस से पूछता क्या तू ने नमाज़े इ़शा बा जमाअ़त पढ़ी थी? तो जवाब मिलता “नहीं”। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/235)

﴾52﴿ बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم दिन के वक़्त नमाज़ पढ़ने में रुकूअ़ व सुजूद की कसरत पसन्द करते और रात की नमाज़ में त़वील क़ियाम करना पसन्द करते।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/236)

﴾53﴿ नानाए ह़सनैन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते बीबी फ़ात़िमा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا से इरशाद फ़रमाया : यूं दुआ मांगा करो : يَا حَیُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ فَاَغِثْنِیْ وَلَا تَكِلْنِیْۤ اِلٰی نَفْسِیْ طَرْفَةَ عَيْنٍ وَاَصْلِحْ لِیْ شَاْنِیْ كُلَّهٗ तर्जमा : ऐ ज़िन्दा ! ऐ दूसरों के क़ाइम रखने वाले ! तेरी रह़मत के भरोसे पर मैं मदद मांग रहा हूं पस मेरी मदद फ़रमा और मुझे एक लम्ह़े के लिये भी मेरे नफ़्स के ह़वाले मत फ़रमा बल्कि मेरे हर मुआमले की इस्लाह़ फ़रमा दे। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) 1/95) (سنن الکبری للنسائی،6/147،حدیث:10405بتقدمٍ و تاخُّرٍ)

﴾54﴿ ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुब्ह़ो शाम की दुआ

सरकारे नामदार मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुब्ह़ो शाम येह दुआ मांगा करते और कभी नाग़ा न फ़रमाते : “اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَسْئَلُكَ الْعَافِيَةَ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ، وَاَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِیْ دِيْنِیْ وَدُنْيَایَ، وَفِیْۤ اَهْلِیْ وَمَالِیْ، اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَتِیْ وَاٰمِنْ رَوْعَاتِیْ، وَاَقِلْنِیْ عَثَرَاتِیْ، اَللّٰهُمَّ احْفَظْنِیْ مِنْ بَيْنِ يَدَیَّ وَمِنْ خَلْفِیْ وَعَنْ يَمِيْنِیْ وَعَنْ شِمَالِیْ وَمِنْ فَوْقِیْ۔”

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! मैं तुझ से दुनिया व आख़िरत में आ़फ़ियत मांगता हूं और अपने दीनो दुनिया और मालो औलाद में अफ़्वो आ़फ़ियत त़लब करता हूं, ऐ **अल्लाह** पाक ! मेरी पर्दापोशी फ़रमा, मुझे ख़ौफ़ से अम्न अ़त़ा फ़रमा और मेरी लग़्ज़िशों को मुआ़फ़ फ़रमा, ऐ **अल्लाह** पाक ! मेरे सामने और पीछे से और मेरे दाएं, बाएं और ऊपर से मेरी ह़िफ़ाज़त फ़रमा।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) 1/98)(ابوداود،4/414،حدیث:5074)

﴾55﴿ ख़ूबसूरत दुआ

يَا غَوْثُ ! يَا مُغِيْثُ ! يَا مُسْتَغَاثُ ! يَا غِيَاثَ الْمُسْتَغِيْثِيْنَ ! لَا تَكِلْنِیْ اِلٰی نَفْسِیْ يَا رَبِّ ! طَرْفَةَ عَيْنٍ فَاَهْلِكَ وَلَا تَكِلْنِیْۤ اِلَی الْخَلْقِ فَاَضِيْعَ، اِكْلَاْنِیْ كِلَاءَةَ الْوَلِيْدِ وَلَا تُخَلِّ عَنِّیْ وَتَوَلَّنِیْ بِمَا تَتَوَلّٰی بِهٖ عِبَادَكَ الصَّالِحِيْنَ۔

तर्जमा : ऐ मददगार ! ऐ फ़रियादरस ! ऐ वोह ज़ात जिस से मदद त़लब की जाती है ! ऐ फ़रियादियों के फ़रियादरस ! ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझे एक लम्ह़े के लिये भी मेरे नफ़्स के सिपुर्द न फ़रमाना कि मैं हलाक हो जाऊं और न ही मुझे मख़्लूक़ के ह़वाले करना कि मैं बरबाद हो जाऊं, बल्कि एक नौज़ाइदा बच्चे की त़रह़ मेरी ह़िफ़ाज़त फ़रमा और मुझे तन्हा न छोड़ और मुझ से इसी त़रह़ मह़ब्बत फ़रमा जिस त़रह़ तू अपने नेक व सालेह़ बन्दों से फ़रमाता है। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/121)

﴾56﴿ बेहतरीन दुआ

”اَنَا عَبۡدُكَ اِبۡنُ عَبۡدِكَ، نَاصِيَتِیۡ بِيَدِكَ، جَارٍ فِیَّ حُكۡمُكَ، نَافِذٌ فِیَّ قَضَآؤُكَ عَدۡلٌ فِی مَشِيۡٓـَٔـتِكَ، اِنۡ تُعَذِّبۡ فَاَهۡلُ ذٰلِكَ اَنَا، وَاِنۡ تَرۡحَمۡ فَاَهۡلُ ذٰلِكَ اَنۡتَ فَافۡعَلۡ اَللّٰهُمَّ يَا مَوۡلَایَ ! يَآاَللّٰهُ ! يَا رَبِّ ! افۡعَلۡ بِیۡ مَآ اَنۡتَ لَهٗٓ اَهۡلٌ وَّلَا تَفۡعَلۡ اَللّٰهُمَّ يَا رَبِّ ! يَآ اَللّٰهُ ! بِیۡ مَآ اَنَا لَهٗٓ اَهۡلٌ فَاِنَّكَ اَهۡلُ التَّقۡوٰی وَاَهۡلُ الۡمَغۡفِرَةِ“

तर्जमा : (ऐ **अल्लाह** पाक) मैं तेरा बन्दा हूं, तेरे बन्दे का बेटा हूं, मेरी पेशानी तेरे दस्ते क़ुदरत में है, मेरे मुतअ़ल्लिक़ तेरा हुक्म जारी है, मुझ पर तेरी क़ज़ा नाफ़िज़ है तेरी मशिय्यत में अ़द्ल है, अगर तू मुझे अ़ज़ाब दे तो मैं उस का अहल हूं और अगर मुझ पर रह़म फ़रमाए तो तू उसी शान के लाइक़ है। पस मेरे साथ (अपने शायाने शान) सुलूक फ़रमा। ऐ **अल्लाह** पाक ! ऐ मेरे मौला ! ऐ **अल्लाह** पाक ! ऐ मेरे रब ! मेरे साथ ऐसा सुलूक फ़रमा जो तेरे शायाने शान है और ऐ **अल्लाह** पाक ! ऐ मेरे रब ! ऐ **अल्लाह** पाक ! मेरे साथ ऐसा सुलूक न फ़रमाना जिस का मैं अहल हूं, क्यूंकि तू ही तक़्वा व मग़्फ़िरत का मालिक है। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/123)

﴾57﴿ अस्माए हुस्ना के वसीले से दुआ

जब कोई **अल्लाह** पाक से दुआ करे तो उस के अस्माए हुस्ना के मआनी के वसीले से करे कि येह उस की सिफ़ात हैं और वोह इस तरह दुआ करने को पसन्द फ़रमाता है और उस ने उन अस्माए हुस्ना को ज़ाहिर भी इसी लिये फ़रमाया ताकि दुआ मांगने वाला उन के वसीले से दुआ मांगा करे : मसलन इस तरह दुआ मांगी जाए :

يَا جَبَّارُ! اُجْبُرْ قَلْبِیْ، یَا غَفَّارُ! اِغْفِرْ ذَنْبِیْ، یَا رَحْمٰنُ! اَصْلِحْنِیْ،
یَا رَحِیْمُ! اِرْحَمْنِیْ، یَا تَوَّابُ! تُبْ عَلَیَّ، یَا سَلَامُ! سَلِّمْنِیْ۔

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/253)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علی مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआत, आरास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मकतबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पैम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मामूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पैम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दावत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	01	हर शै सज्दा रेज़	07
इ़ल्म नूर है	01	तहिय्यतुल मस्जिद के क़ाइम मक़ाम	08
बातिनी उ़लूम पर अ़मल कैसे ?	02	बे वुज़ू मस्जिद में दाख़िल होना	08
तसव्वुफ़ की तारीफ़ और सूफ़ी कौन ?	02	सूरज के सात ज़वाल के वक़्त	08
तसव्वुफ़ की अस्ल	02	सूरज की रफ़्तार	08
शैख़ अबू तालिब मक्की, आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللہِ عَلَيْهِمَا के नज़्दीक	03	जहन्नमी जन्नती हो जाएगा	09
		जन्नत के काम	11
रिज़ाए इलाही की तारीफ़ व हुसूल	03	क़ुर्बे इलाही का ज़रीआ	12
40 साल तक हिक्मत के मोती इकट्ठे किये	03	रातों की इ़बादत	12
अपने वक़्त की बेहतरीन तक़्सीमकारी	04	रात के आख़िरी हिस्से में सोना	13
मुरीद के लिये सात ज़रूरी बातें	05	जमाअ़त फ़ौत होने का सबब	13
अफ़्ज़ल इ़ल्म और अफ़्ज़ल अ़मल	06	हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुब्ह़ो शाम की दुआ	14
आठ घंटे नींद मुस्तह़ब	07	ख़ूबसूरत दुआ	14

अगले हफ़्ते का रिसाला

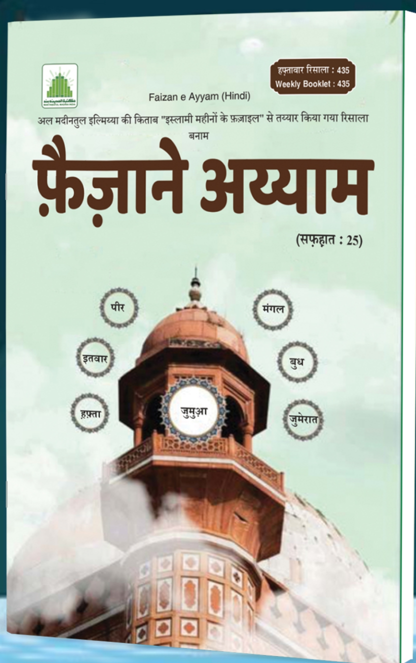

DAWATE ISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025